IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भगवान बुद्ध और बाल गंगाधर तिलक का कर्म योग दर्शन : एक तुलनात्मक अध्यायन"

नाम–पशुपति महतो
कक्षा– योगा पी.एच.डी
अनुक्रमांक–पी.एच.डी.0220034
ग्राम–नारायण–गढ़ पोस्ट–सिघाँव
थाना–लौकरिया जिला–प0चम्पारण (बिहार)

भारतीय योग दर्षन की विविध परम्पराओं में कर्म योग का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भगवान श्री कृष्ण द्वारा भगवत गीता में प्रस्तावित कर्म योग की अवधारणा में अनेक विद्वानों, विचारकों और महापुरूषों को अत्यधिक आष्चर्य चकित और प्रभावित किया है। भगवान बुद्ध के सदाचारिक अवधारणा जीवन–दर्षन में भी कर्म का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। वहीं बालगंगाधर तिलक ने गीता के "कर्मण्येवाधिकारस्ते" ष्लोक की नवीन व्याख्या प्रस्तुत करके स्वतंन्त्रता आन्दोलन को प्रेरणा दिया। इस षोध पत्र का उद्देष्य हि– इन दोनों विभूतियों के कर्म योग और दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

भगवान बुद्ध का कर्म योग दर्षन जीवन और दार्षनिक पृष्ठभूमि भगवान बुद्ध जिनका मूल नाम सिद्धार्थ गौतम था। उनका जन्म लगभग 563 ई0 पूर्व में कपिलवस्तु में हुआ था जो कि वर्तमान समय के नेपाल की तराई में स्थित है। वे षाक्य वंष के एक क्षत्रिय राजघराने के राजकुमार थे उन्होंने एक समृद्ध और भोग विलासपूर्ण जीवन के मध्य जीवन की क्षणिकता, दुःख बुंढ़ापा और मृत्यु को देखा और उन समस्याओं के निदान की खोज में गृह त्याग दिया। उन्होंने गहन ध्यान साधनाए कठिन तपस्या की फिर जाकर उन्हे बोधगया में बोद्धिवृक्ष (पीपल) के नीचे ज्ञान की प्राप्ती हुई और वे भगवान बुद्ध कहलाए। बुद्ध का दर्षन मूलतः व्यावहारिक था वह आत्म उद्धार और समाज कल्याण के ताल–मेल पर आधारित था। उन्होने कष्ट, पिड़ा, कर्म निर्वाण और आत्म नियंत्रण जैसे विषयों को केवल दार्षनिक दृष्टि से नहीं देखा बल्कि मानव जीवन के व्यावहारिक पक्ष को भी जोड़ा था।

चार आर्य सत्य और अष्ठांगिक मार्ग में कर्म भगवान बुद्ध के उपदेषों की नीव चार आर्य सत्यों पर आधारित हैं। संसारिक जीवन दुःखमय है। मनुष्य की इच्छा ही दुःख का कारण है, तृष्णा की निवृत्ति से दुःख का अंत संभव है। अतः दुःख के अंत हेतु अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना आवष्यक है।

अष्टांगिक मार्ग इस प्रकार हैं–

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाक् (वाणी)
4. सम्यक कर्म (आचरण)
5. सम्यक आजीविका
6. सम्यक प्रयास
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

यहाँ सम्यक कर्म और सम्यक आजीविका कर्म योग के बौद्ध संस्करण को प्रकट करते हैं। सम्यक कर्म का अर्थ है हिंसा, चोरी और कर्म से रहित आचरण। सम्यक आजीविका का अर्थ है ऐसा जीवन निर्वाह जो किसी को बिना हानि कष्ट पहुँचाए बिना अनैतिकता पर आधारित हो।

भगवान बुद्ध का कर्म योग अध्यात्मिकता और नैतिकता पर आधारित है। जहाँ हर क्रिया का उद्देष्य आत्म–षुद्धि और अहिंसा है।

बुद्ध के अनुसार धर्म और कर्मफल भगवान बुद्ध ने कर्म की केवल षारीरिक या बाह्य क्रिया रूप को नहीं देखा बल्कि उन्होंने मानसिक क्रियाओं को भी कर्म में षामिल किया। उन्होंने कहा–

"चितेन नियति लोको चितेन परिकिस्सति

चितस्य एक घम्मेन"

(मन द्वारा ही यह संसार संचालित होता है।)

बुद्ध का मत था कि मनुष्य जो सोचता है वहीं उसका कर्म बनता है। विचार, वाणी और कार्य तीनों ही कर्म के रूप हैं।

भगवान बुद्ध के अनुसार प्रत्येक कर्म का फल निष्चित है। अच्छे कर्म सुखद फल देते है और बुरे कर्म दुःखद। परन्तु उन्होने इसे ईष्वर की इच्छा से नहीं जोड़ा। बल्कि प्राकृतिक और नैतिक नियम के रूप में प्रस्तुत किया। उनका यह दृष्टिकोण नैतिक स्वतंत्रता और जवाबदेही पर आधारित है। व्यक्ति स्वयं अपने कर्मों का निर्माता और भोगी होता है।

बुद्ध का कर्म योग और निर्वाण की ओर त्याग भगवान बुद्ध के कर्मफलों का अतिंम लक्ष्य निर्वाण (मोक्ष) है। जो तृष्णा और अज्ञान से भक्ति का परीक्षण है। यह केवल मात्र ध्यान और संयम से नहीं बल्कि सही कर्म के द्वारा भी संभव है। उन्होने करुणा और मैत्री जैसे गुणों को कर्म का अभिन्न अंग बताया है।

एक भिक्षु गृहस्थ या किसी भी व्यक्ति के लिए उन्होने यह स्पष्ट किया की– मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करें।

- कोई किसी को दुःख कष्ट न पहुँचाए।
- प्रत्येक मनुष्य सत्य, अंहिसा, ब्रम्हचर्य और संतोष जैसे गुणों को अपनाए।

इस प्रकार से भगवान बुद्ध का कर्म योग नैतिकता ध्यान और प्रथा का नैतिक समन्वय है।

जीवन और वैचारिक पृष्ठभूमि– बाल गंगाधर तिलक भारतीय राष्ट्रवाद के एक महान राष्ट्रवादी नेता समाज सुधारक और विचारक थे। उन्हें लोकमान्य की उपाधि मिली। बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरी महाराष्ट्र में हुआ था। स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा का नारा दिया था। गीता रहस्य और कर्म योग की व्याख्या गीता रहस्य में तिलक ने निष्काम कर्म के बजाय निष्काम कर्म की इच्छा के साथ कर्म करने की बात कही अर्थात कर्म करते समय उद्देष्य होना चाहिए परन्तु वह कर्म निःस्वार्थ होना चाहिए। अन्ततः 01 अगस्त 1920 को तिलक का निधन हो गया। तिलक का मानना था कि भारत की स्वतंन्त्रता ईष्वर का दिया हुआ अधिकार है। और इसे छिनकर लेना होगा। उनका जीवन और चिंतन कर्म राष्ट्रमार्ग और कर्तव्यनिष्ठ की इच्छा आदर्षो पर आधारित था। तिलक का ज्ञान उपनिषदों और विषेष रूप से श्रीमद्भगवद गीता की गहराई पर जाता था। उन्होंने गीता के इस भोग को अपने विचारों का मूल आधार बनाया और इसे स्वराज्य प्राप्ति का साधन माना।

कर्म और राष्ट्रधर्म

तिलक ने कर्म को व्यक्तिगत उन्नती से ऊपर उठाकर राष्ट्रधर्म का रूप दिया। उनका मानना था कि देष सेवा और स्वतंन्त्रता संघर्ष ही एक श्रेष्ठ कर्म है।

तुलनात्मक अध्ययन–

भगवान बुद्ध– नैतिक व मानसिक, षुद्धि का स्थान, निर्वाण (मुक्ति), सम्यक कर्म (अहिंसा, सत्य,संयम) ईष्वर की अपेक्षा नहीं करना

बाल गंगाधर तिलक– समाज व राष्ट्र के लिए सक्रिय कार्य, राष्ट्र की स्वंतन्त्रता व सामाजिक जागरण, लोकहितायत कर्म (जन सेवा, क्रान्ति), कर्म ही सर्वोच्च

समानताएँ–

• दोनों ने कर्म को केवल बाह्य क्रिया नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक अभ्यास माना।

• दोनों का कर्म योग कर्तव्य भावना से प्रेरित था।

भिन्नताएँ

• बुद्ध का दृष्टिकोण व्यक्तिगत मुक्ति पर केन्द्रित था जबकि तिलक का दृष्टिकोण सामाजिक, राजनीतिक चेतना पर था।

• बुद्ध ने अहिंसा की सर्वोपरि माना जबकि तिलक ने कभी–कभी संघर्ष का समर्थन भी किया है।

आज के भारत वर्ष में कर्म योग की आवष्यकता

• नैतिक मूल्यों की पुनस्थापना

• राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी।

बुद्ध और तिलक के कर्म दृष्टिकोण से षिक्षा व्यक्तिगत षांति (बुद्ध) और सामाजिक चेतना

(तिलक) की दृष्टि से दोनों का समन्वय आवष्यक है।

निष्कर्ष– भगवान बुद्ध और बालगंगाधर तिलक दोनो ही महान चिंतक थे, जिन्होने अपने युग की समस्याओं का समाधान हेतु कर्म को प्रमुख साधन माना। उनके विचार भले ही भिन्न–भिन्न है, परन्तु उनका उद्देष्य मानव कल्याण ही था। वर्तमान समय में उनके कर्म दर्षन का समन्वित अध्ययन का केवल बौद्धिक विकास नहीं हैं, बल्कि समाज व राष्ट्र उत्थान के लिए भी मार्गदर्षक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. तिलक,बाल गंगाधर.गीता रहस्य,केसरी पब्लिकेषन,पुणे,1915।
2. संकृत्यायन,राहुल, बुद्ध चरित्र.राज कमल प्रकाषन, 1956।
3. बुद्ध, गौतम। धम्मपद, अनुवादः केषव पाण्डे,गीता प्रेस, वर्ष अनुपलब्ध।
4. व्यास, वेद। श्रीमद्भगवद् गीता, टीका सहीत, गीता प्रेस, गोरखपुर 2021।
5. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली। भारतीय दर्षन. खंड1, मोतीलाल बनारसीदास, 2014।
6. गुहा, रामचंन्द्र। आधुनिक भारत के निर्माता. राजकमल प्रकाषन,2019।